भजन

तेरी रूहों ने तुझको अब जान लिया है
तेरी निसवत खसम आखिर हैं हम
1– तेरी मेहर का कोई शुमार नहीं,
बेशुमार है यह इसका पार नहीं
रहती हरपल मेहर के ही साये में हम,
तेरी मेहरों करम हम पे खसम
2– कोई बहकाए मुझको मैं बहकूं नहीं,
बिन तेरे और कुछ भी मैं देखूं नहीं
तेरी वाणी ने ऐसा असर है किया,
हुए तेरे खसम आखिर हैं हम
3– धनी आये हैं सबको बतायेगें हम,
खुद जागें हम सबको जगायेंगे हक
यहीं फुरमान मेरे धनी जी का है,
पिया तेरा हुकम निभायेंगे हम
4– हम हारे और आप जीते धनी,
जान अंगना इनायत की है घनी
अपने घर अब तो वापिस चलो ए पिया,
सुख खिलवत का कब पायेंगे हम